

गोदान उपन्यास में चित्रित भारतीय कृषक जीवन के विविध पक्ष

डॉ. पी.एम.आर. जयंती

हिंदी व्याख्याता

एस.के.आर. एंड एस.के.आर. महिला शासकीय डिग्री महाविद्यालय (स्वायत्त)

नागराजुपेटा, कड़प्पा (आंध्र प्रदेश)

Received- 07 July- 2026

Accepted- 08 July- 2026

Published- 30 September-2026

Corresponding Author-

डॉ. पी.एम.आर. जयंती

हिंदी व्याख्याता

एस.के.आर. एंड एस.के.आर. महिला शासकीय डिग्री महाविद्यालय
(स्वायत्त) नागराजुपेटा, कड़प्पा (आंध्र प्रदेश)

DOI- <https://doi.org/10.67275/SU.2026.041502>

Funding Policy-

‘Shodh Utkarsh’ is an independent journal and receives no financial support or grant from any public, commercial, or not-for-profit organization.

वित्त पोषण नीति-

‘शोध उत्कर्ष’ एक स्वतंत्र पत्रिका है। इसे किसी भी सार्वजनिक, वाणिज्यिक या गैर-लाभकारी संगठन से कोई वित्तीय सहायता, अनुदान या फंडिंग प्राप्त नहीं होती है।

Copyright Notice -

© 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC-BY 4.0).

कापीराइट सूचना-

©2026 लेखक। यह कार्य क्रिएटिव कॉमन्स अ Attribution 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस (CC-BY 4.0) के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त है।



आकर उनकी यह दृष्टि अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त करती है। गोदान की कथा केवल बेलारी और सेमरी नामक दो गांवों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह तत्कालीन सात लाख भारतीय गांवों की धड़कन और उनकी अंतहीन कराह का प्रतिनिधित्व करती है। उपन्यास का नायक 'होरी' केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि भारतीय कृषि संस्कृति का शाश्वत प्रतीक है—जो अपनी मिट्टी से अटूट प्रेम करता है, मर्यादा के नाम पर सब कुछ न्योछावर करने को तत्पर रहता है, और अंततः ऋण के विशाल पर्वत के नीचे दबकर दम तोड़ देता है। डॉ. रामविलास शर्मा के शब्दों में, "गोदान औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत भारतीय कृषक वर्ग के महाविनाश का इतिहास है।" इस शोध पत्र का उद्देश्य गोदान में चित्रित कृषक जीवन के उन विविध पक्षों का उद्घाटन करना है जो आर्थिक अभावों से लेकर सांस्कृतिक मर्यादाओं तक फैले हुए हैं।

आर्थिक पक्ष: महाजनी सभ्यता और शाश्वत ऋणग्रस्तता-कृषक जीवन का सबसे क्रूर और प्रत्यक्ष पक्ष उसका आर्थिक ढाँचा है, जो पूरी तरह से कर्ज और शोषण पर आधारित है। प्रेमचंद ने 'गोदान' में जिस आर्थिक यथार्थ को प्रस्तुत किया है, उसे वे स्वयं 'महाजनी सभ्यता' कहते थे। होरी के जीवन का सबसे बड़ा सच यह है कि वह जितना अधिक परिश्रम करता है, उतना ही अधिक कर्ज के दलदल में धंसता चला जाता है। उपन्यास के प्रारंभ में ही होरी की आर्थिक विवशता स्पष्ट हो जाती है जब वह कहता है, "जब तक गर्दन दसरो के पैरों के नीचे दबी हो, तब तक उन्हें सहलाने में ही कुशल है।" होरी पर जमींदार रायसाहब का लगान बकाया है, दातादीन का कर्ज है, और झिगुरी सिंह तथा नोखेराम जैसे सुदखोरों का ब्याज दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। भारतीय किसान के लिए ऋण कोई आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि यह उसकी विरासत है। वह ऋण में जन्म लेता है, ऋण में जीता है और अपनी संतान के लिए ऋण छोड़कर ही मर जाता है। "खेती में अब क्या रखा है? लागत भी तो नहीं निकलती। पर करें क्या, पुरखों का धंधा ठहरा, छोड़ते नहीं बनता।" - होरी प्रेमचंद ने दिखाया कि किस प्रकार सूद की दरें इतनी अमानवीय थीं कि पांच रुपये का कर्ज कुछ ही वर्षों में बढ़कर पचास रुपये हो

सारांश:-मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित 'गोदान' (1936) हिंदी उपन्यास साहित्य की ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतीय वास्तुकला की एक ऐसी कालजयी कृति है, जो औपनिवेशिक भारत में कृषक समाज के महाविनाश की करुण गाथा को प्रामाणिकता के साथ व्यक्त करती है। यह उपन्यास भारतीय कृषक जीवन के केवल आर्थिक संकट को ही नहीं उकेड़ता, बल्कि उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक पक्षों का एक अत्यंत सूक्ष्म और व्यापक कोलाज प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'गोदान' के केंद्रीय पात्र होरी और उसके समकालीन ग्रामीण परिवेश के माध्यम से सामंती जमींदारी व्यवस्था, औपनिवेशिक महाजनी चंगुल, धार्मिक पाखंड, और जातिवादी स्तरीकरण के बीच पिसते हुए किसान के अस्तित्व की मीमांसा की गई है। इस शोध के अंतर्गत प्रेमचंद की यथार्थवादी दृष्टि का विश्लेषण करते हुए यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार भारतीय किसान अपनी परंपराप्रियता, मर्यादा की रक्षा की ललक और गोदान की आध्यात्मिक आकांक्षा के कारण अंततः एक खेतिहर मजदूर और अंत में एक मृत देह में परिणत हो जाता है।

बीज शब्द :-गोदान, प्रेमचंद, कृषक जीवन, होरी, ऋणग्रस्तता, महाजनी सभ्यता, सामंतवाद, सामाजिक मर्यादा, धार्मिक शोषण, औद्योगीकरण।

प्रस्तावना :-मुंशी प्रेमचंद का अंतिम और प्रौढ़तम उपन्यास 'गोदान' भारतीय ग्रामीण जीवन और कृषक संस्कृति का महाकाव्य है। बीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक का भारत एक बड़े ऐतिहासिक और सामाजिक संक्रांति काल से गुजर रहा था। एक तरफ सदियों पुरानी सामंती व्यवस्था ढह रही थी, तो दूसरी तरफ पूंजीवाद और औद्योगीकरण के पैर पसर रहे थे। इस दोहरे पाट के बीच यदि कोई सबसे बुरी तरह कुचला जा रहा था, तो वह था—भारत का पारम्परिक किसान। प्रेमचंद ने अपने कथा-साहित्य में सदैव शोषितों, वंचितों और कृषकों को केंद्र में रखा, परंतु 'गोदान' में

जाता था। होरी द्वारा भोला से गाय उधार लेना और उसके बदले में अपने भाई की बदनामी सहना तथा अंत में बासठ रुपये के डांड (जुर्माने) के बोझ तले दब जाना, यह दर्शाता है कि कृषक अर्थव्यवस्था में अधिशेष की कोई गुंजाइस नहीं थी। फसल आते ही खलिहान पर ही लेनदारों का कब्जा हो जाता था और किसान के हाथ में केवल अगली फसल तक जीवित रहने का आश्वासन बचता था।

५. सामाजिक एवं जातिगत पक्ष: मर्यादा और सामाजिक स्तरीकरण- भारतीय कृषक समाज केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि कठोर सामाजिक और जातिगत नियमों से भी बंधा हुआ है। गोदान में जाति व्यवस्था का जो नग्न रूप दिखाई देता है, वह किसान की रीढ़ को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। होरी महतो है, जो एक मध्यवर्ती कृषक जाति है। समाज में अपनी 'मर्यादा' या 'भलमनसाहत' बनाए रखना उसके लिए जीवन का सबसे बड़ा मूल्य है।

जब होरी का पुत्र गोबर, एक नीची जाति (अहीर) की विधवा शिया (झुनिया) को गर्भवती करके घर ले आता है, तो पूरे गांव की पंचायत सक्रिय हो जाती है। यह पंचायत न्याय की संस्था नहीं, बल्कि शोषक वर्ग का एक ऐसा औजार है जो धर्म और जाति के नाम पर गरीबों को लूटता है। झुनिया को घर में आश्रय देने के अपराध में होरी पर अस्सी रुपये नकद और तीस मन अनाज का डांड लगाया जाता है। अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा और मर्यादा को बचाने के लिए होरी इस अन्यायपूर्ण फैसले को भी सहर्ष स्वीकार कर लेता है, भले ही इसके लिए उसे अपना घर और बैल तक बेचने पड़ें।

इसके विपरीत, प्रेमचंद ने नगर और ग्राम के सामाजिक पक्षों का अंतर्विरोध भी दिखाया है। शहर में मिस मालती, मिस्टर खन्ना और रायसाहब के बीच जो आधुनिक, पश्चिमी रंग-ढंग का समाज है, वह गांव के इस पारंपरिक, संकीर्ण और जातिवादी समाज से बिल्कुल भिन्न है। परंतु त्रासदी यह है कि शहर की यह पूंजीवादी व्यवस्था भी परोक्ष रूप से गांव के इसी शोषित सामाजिक ढांचे पर टिकी हुई है।

धार्मिक पक्ष: पुरोहिताई पाखंड और धार्मिक शोषण-धार्मिक पक्ष भारतीय किसान के जीवन का सबसे संवेदनशील और साथ ही सबसे अधिक शोषित होने वाला क्षेत्र है। 'गोदान' का शीर्षक स्वयं में एक अत्यंत पवित्र और अंतिम धार्मिक कृत्य को सूचित करता है—मृत्यु के समय वैतरणी पार करने के लिए गाय का दान। परंतु प्रेमचंद ने इस धार्मिक प्रतीक को उलटकर इसे एक अत्यंत क्रूर शोषक हथियार के रूप में प्रस्तुत किया है। गांव के पुरोहित पीड़ित दातादीन और उनका पुत्र मातादीन धर्म के ठेकेदार हैं। वे होरी की धार्मिक भीरुता का पूरा लाभ उठाते हैं। होरी के मन में यह गहरी आस्था है कि बिना गोदान के गति नहीं मिलती और यदि ब्राह्मण नाराज हो गए तो परलोक बिगड़ जाएगा। इसी परलोक को सुधारने की चिंता में उसका इहलोक (वर्तमान जीवन) नर्क बन जाता है।

जब होरी मरणासन्न स्थिति में होता है, लू लगने से उसकी चेतना लुप्त हो रही होती है, तब भी दातादीन उसके पास आकर सहानुभूति जताने के बजाय कहता है, "होरी जा रहा है, इसका गोदान कराओ, नहीं तो इसकी आत्मा प्रेत योनि में भटकेगी।" धनिया अपनी जी-तोड़ मेहनत से कमाए गए अंतिम बीस आने पैसे

गाय है, न बछिया, न पैसा। यही इनका गोदान है।" यह दृश्य भारतीय कृषक जीवन में धार्मिक शोषण की पराकाष्ठा को रेखांकित करता है।

पारिवारिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्ष: पीढ़ियों का अंतराल और बिखराव-कृषक जीवन का एक अन्य महत्वपूर्ण पक्ष उसका पारिवारिक ढांचा है, जो संयुक्त परिवार की अवधारणा पर आधारित था। परंतु आर्थिक विपन्नता किस प्रकार पारिवारिक संबंधों में जहर घोल देती है, इसका सजीव चित्रण गोदान में मिलता है। होरी के अपने भाइयों—हीरा और सोभा—के साथ संबंध ईर्ष्या, अविश्वास और कलह से भरे हुए हैं। हीरा द्वारा होरी की प्रिय गाय को जहर दे देना इस बात का प्रमाण है कि गरीबी ने किस प्रकार मानवीय संवेदनाओं को कुंठित कर दिया था। इसके अतिरिक्त, उपन्यास में 'पीढ़ियों का अंतराल' (Generation Gap) अत्यंत स्पष्ट रूप से उभरकर आता है। होरी और उसके पुत्र गोबर के विचारों में गहरा अंतर्विरोध है। होरी सामंती मूल्यों, भाग्यवादिता और सहिष्णुता में विश्वास करता है। वह मानता है कि जो जैसा कर्म करेगा, वैसा फल पाएगा और बड़े लोगों का विरोध करना पाप है।

"हमारा और उनका भाग्य अलग है। वे राजा हैं, हम प्रजा। भगवान ने उन्हें बड़ा बनाया है, तो हमें छोटा।"—होरी का भाग्यवादी दृष्टिकोण इसके विपरीत, युवा पीढ़ी का प्रतीक गोबर इस भाग्यवादिता को सिरे से खारिज करता है। वह विद्रोह करता है और कहता है, "जो हमें लूटते हैं, वे बड़े कैसे हुए? वे तो डाकू हैं।" गोबर गांव के इस दमघोटू माहौल को छोड़कर शहर चला जाता है। शहर जाकर उसमें एक नई चेतना आती है, वह अधिकारों के लिए लड़ना सीखता है, परंतु वह भी पूरी तरह सुखी नहीं हो पाता। होरी और गोबर का यह वैचारिक द्वंद्व वास्तव में मरती हुई सामंती कृषि-संस्कृति और उभरती हुई औद्योगिक-मजदूर चेतना का द्वंद्व है।

राजनीतिक एवं प्रशासनिक पक्ष: औपनिवेशिक गठजोड़-गोदान में चित्रित कृषक जीवन का राजनीतिक पक्ष तत्कालीन ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और स्थानीय शोषकों के त्रिकोणीय गठजोड़ को उजागर करता है। इस त्रिकोण के तीन शीर्ष थे—ब्रिटिश सरकार, देशी जमींदार (रायसाहब) और स्थानीय महाजन व पुलिस। रायसाहब खुद को बहुत उदार और राष्ट्रवादी दिखाते हैं। वे काउंसिल के सदस्य हैं, साहित्य प्रेमी हैं और किसानों के प्रति सहानुभूति का नाटक करते हैं। परंतु जब लगान वसूलने का समय आता है, तो वे अपने कारिंदों को खुली छूट दे देते हैं। प्रेमचंद ने रायसाहब के माध्यम से जमींदारों के दोहरे चरित्र को बेनकाब किया है। जब गांव में कोई अपराध या सामाजिक विवाद होता है, तो पुलिस (दारोगा) न्याय करने नहीं, बल्कि घूस खाने आती है। होरी के घर की तलाशी के समय धनिया का दारोगा पर बरसना और उसकी कायरता को उजागर करना यह दिखाता है कि किसान के मन में इस प्रशासनिक व्यवस्था के प्रति कितना गहरा अविश्वास और आक्रोश था।

कृषक जीवन की रीढ़: धनिया और नारी शक्ति का पक्ष-'गोदान' में कृषक जीवन का विश्लेषण तब तक अपूर्ण रहेगा जब तक कि 'धनिया' के चरित्र पर विचार न किया जाए। धनिया भारतीय कृषक स्त्री की अदम्य जिजीविषा, साहस और यथार्थवादी चेतना का साक्षात् रूप है। जहाँ होरी भीरु है, परंपरावादी है और दबने वाला है, वहीं धनिया जुझारू है, स्पष्टवादी है और अन्याय का तत्काल विरोध करने वाली है। धनिया जानती है कि समाज और

वह दातादीन को 'कसाई' कहने से नहीं हिचकती और जमींदार के कारिंदों को सीधे चुनौती देती है। होरी को बार-बार सचेत करते हुए वह कहती है, "तुम तो जैसे उनके गुलाम हो गए हो।" कृषक परिवार को बिखरने से बचाने और विपत्ति के समय होरी के कंधे से कंधा मिलाकर खेत में मजदूरी करने वाली धनिया यह सिद्ध करती है कि भारतीय कृषि केवल पुरुषों के श्रम पर नहीं, बल्कि स्त्रियों के अगाध संबल और अडिग साहस पर टिकी हुई है।

निष्कर्ष :- उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि मुंशी प्रेमचंद कृत 'गोदान' भारतीय कृषक जीवन का कोई एकआयामी चित्र नहीं है, वरन् यह एक बहुआयामी और अत्यंत प्रामाणिक समाजशास्त्रीय दस्तावेज है। प्रेमचंद ने बड़ी निर्ममता के साथ उस यथार्थ को प्रस्तुत किया है जहाँ एक स्वाभिमानी किसान (होरी) क्रमशः अपनी जमीन खोता है, बैल खोता है, अपना घर खोता है और अंततः एक दिहाड़ी मजदूर बनकर सड़क पर पत्थर तोड़ते हुए दम तोड़ देता है। इस शोध-विषय की सार्थकता इस बात में है कि 'गोदान' के प्रकाशन के लगभग नौ दशकों के बाद भी, आज स्वतंत्र भारत में भी, कृषक जीवन के ये विविध पक्ष—जैसे ऋणग्रस्तता, बिचौलिए, सामाजिक असुरक्षा और किसानों की आत्महत्याएं—पूरी तरह समाप्त नहीं हुए हैं। होरी आज भी भारत के किसी न किसी गाँव में कर्ज के बोझ तले सिसक रहा है। प्रेमचंद ने गोदान में जिस कृषक त्रासदी का अंकन किया था, वह आज भी हमारे आत्मचिंतन और नीतिगत सुधारों के लिए एक अत्यंत प्रासंगिक और जीवंत चेतावनी है।

११. संदर्भ सूची :-

१. भंडारी, मन्मू एवं प्रेमचंद. (१९३६). गोदान. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन (संशोधित संस्करण)।
२. शर्मा, डॉ. रामविलास. (१९६६). प्रेमचंद और उनका युग. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
३. राय, अमृत. (१९६२). प्रेमचंद: कलम का सिपाही. इलाहाबाद: हंस प्रकाशन।
४. सिंह, डॉ. नामवर. (१९८५). दूसरी परंपरा की खोज. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
५. चौहान, शिवदान सिंह. (१९५४). साहित्य की समस्याएं. दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस।
६. मछवे, प्रभाकर. (१९७८). प्रेमचंद: एक पुनर्मूल्यांकन. बम्बई: मैकमिलन इंडिया।
७. गुप्त, मन्मथनाथ. (१९६८). प्रेमचंद और उनका कथा साहित्य. दिल्ली: लिपि प्रकाशन।
८. तिवारी, डॉ. रामचंद्र. (२००५). हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।